IJEASM
International Journal of Engineering Applied Science and Management
ISSN (Online): 2582-6948
Vol. 5 Issue 12, December 2024

पंडित दुर्गा लाल जी के कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में भूमिका

प्रगति खरे[1], डॉ. विजया शर्मा[2]
शोधार्थी,नृत्य विभाग,बरकतुल्लाह यूनिवर्सिटी ,भोपाल, मध्य प्रदेश[1]
विभागाध्यक्ष, नृत्य विभाग,शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ,बरकतुल्लाह यूनिवर्सिटी,भोपाल ,मध्य प्रदेश।[2]

शोध सार- कथक नृत्य, भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपरा का वह अभिन्न अंग है जिसने समय के साथ सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के विविध रूपों को आत्मसात किया है। इस अध्ययन का उद्देश्य पंडित दुर्गा लाल जी के कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में दिए गए योगदान का विश्लेषण करना है। जयपुर घराने के इस विलक्षण नर्तक ने नृत्य की तकनीकी, लयात्मक और भावनात्मक संरचना में जिस प्रकार का नवाचार प्रस्तुत किया, वह भारतीय नृत्य परंपरा में स्थायी स्थान रखता है। उन्होंने कथक नृत्य को न केवल राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया, बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी उसकी गरिमा को स्थापित किया। उनके नृत्य में शुद्धता, आत्मानुभूति और सृजनात्मक प्रयोग का अद्भुत संगम था। इस शोध में उनके नृत्य के सौंदर्यशास्त्रीय तत्वों, शिक्षण शैली, कोरियोग्राफिक रचनाओं, तथा सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन किया गया है। पंडित दुर्गा लाल जी का योगदान इस तथ्य की पुष्टि करता है कि नृत्य केवल शरीर की गति नहीं, बल्कि चेतना और आत्मानुभूति की गहराई का माध्यम है। उनके द्वारा कथक नृत्य की पुनःस्थापना, पुनर्व्याख्या और प्रचार के माध्यम से नृत्य कला को नई जीवनदृष्टि मिली। यह अध्ययन भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपरा के पुनर्संवर्धन और सांस्कृतिक अस्मिता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रमुख शब्द- कथक नृत्य, पंडित दुर्गालाल, भारतीय शास्त्रीय परंपरा, नृत्य प्रचार-प्रसार।

1. प्रस्तावना

भारतीय नृत्य-संस्कृति की विश्वविख्यात परंपरा में "कथक" वह कलात्मक उपासना है, जिसमें नृत्य, संगीत, ताल, भाव और साहित्यिकता का अद्भुत संयोग दृष्टिगोचर होता है। इस नृत्य परंपरा के भीतर "कथक" की विधा को न केवल तकनीकी दृष्टि से बल्कि भावनात्मक अभिव्यक्ति के स्तर पर भी एक अनन्य स्थान प्राप्त है। इस नृत्य-पद्धति को जीवंत, विशद और विश्वप्रसिद्ध स्वरूप प्रदान करने का श्रेय जिस कलाकार को जाता है, जयपुर घराने के अमर नर्तक पंडित दुर्गा लाल जी। उनका योगदान केवल एक कलाकार के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक पुनर्जागरणकर्ता, शैक्षणिक प्रेरणा और भारतीय सौंदर्यशास्त्र के मूर्त रूप में देखा जाना चाहिए।डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम, जो स्वयं एक प्रतिष्ठित भरतनाट्यम नृत्यांगना और नृत्यशास्त्र की अध्येता हैं, उन्होंने भारतीय नृत्य की परंपराओं में "शास्त्रीय पुनर्जागरण" की भूमिका को विशेष रूप से रेखांकित किया है। उनके अनुसार, 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब पारंपरिक नृत्य रूप मंचीय आधुनिकता की ओर बढ़ रहे थे, उस समय पंडित दुर्गालाल जैसे कलाकारों ने कथक को उसके शास्त्रीय मूल से जोड़ते

हुए उसे नई वैश्विक पहचान प्रदान की।डॉ. सुब्रह्मण्यम लिखती हैं कि दुर्गालाल की नृत्यशैली लखनऊ घराने की माधुर्यपूर्णता और जयपुर घराने की तांडव प्रधानता दोनों का संतुलन थी। वे कहते हैं कि दुर्गालाल ने कथक की नृत्यात्मक भाषाको पुनर्परिभाषित किया, जिसमें तालबद्धता मात्र तकनीक नहीं बल्कि आध्यात्मिक संवाद का माध्यम थी। नाद, भाव और ताल का त्रिवेणी संगम दिखाई देता है।पद्मा सुब्रह्मण्यम यह भी मानती हैं कि दुर्गालाल ने कथक को केवल "राजदरबारी कला" के सीमित दायरे से निकालकर उसे आम जनमानस तक पहुँचाया। उन्होंने दूरदर्शन, अंतरराष्ट्रीय मंचों और शैक्षिक परिसरों में कथक को जनसुलभ रूप में प्रस्तुत किया।उनकी दृष्टि में, दुर्गालाल की सबसे बड़ी देन यह थी कि उन्होंने "कथक को फिर से कथा के रूप में लौटाया"— अर्थात् कथक में पुनः भावकथा, चरित्र और नायक-नायिका के संवाद को जीवंत किया।इस दृष्टि से डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम का मत यह स्थापित करता है कि दुर्गालाल जी का योगदान केवल प्रदर्शनात्मक नहीं, बल्कि नाट्यशास्त्रीय पुनर्जागरण की दिशा में था। कथक को नृत्य नहीं, एक "जीवंत अभिनय संवाद" मानते थे। यही कारण है कि उनके नृत्य में भाव, मुद्रा और गतियों के पीछे गहरी सांस्कृतिक व्याख्या विद्यमान थी।डॉ. कुमुदिनी लखिया, जो कथक के आधुनिक पुनरुत्थान की प्रमुख हस्ती मानी जाती हैं, उन्होंने अपने शोध में कथक के मंचीय रूपांतरण की प्रक्रिया पर विशेष ध्यान दिया है। उनके अनुसार, पंडित दुर्गालाल ने कथक को "एकल नृत्य" की सीमाओं से निकालकर "समूह नृत्य" की दिशा में भी प्रयोग किए, जिससे कथक आधुनिक दर्शकों से जुड़ सका।लखिया का मत है कि दुर्गालाल की विशेषता यह थी कि उन्होंने शास्त्रीयता को कभी छोड़ा नहीं, लेकिन उसकी प्रस्तुति को समकालीन संवेदना से जोड़ा। उदाहरणस्वरूप, जब वे रामायणया, कृष्ण लीला के प्रसंगों का मंचन करते थे, तो उनकी प्रस्तुति न केवल धार्मिक भावभूमि तक सीमित रहती थी, बल्कि सामाजिक संदेश का भी वाहक बनती थी।लखिया यह भी लिखती हैं कि दुर्गालाल की नृत्य रचना में संगीतमयता अत्यंत गहरी थी,वे न केवल नर्तक थे, बल्कि पखावज और तबले के ज्ञाता भी थे। यह बहुज्ञता उनके प्रत्येक तिहाई और चक्कर में झलकती थी।उनकी दृष्टि में दुर्गालाल ने कथक को "संवादशील कला" के रूप में पुनर्जीवित किया ऐसा नृत्य जो दर्शक के भीतर भाव-जागरण कर सके।इसलिए, डॉ. कुमुदिनी लखिया का दृष्टिकोण दुर्गालाल को "मंचीय कथक के पुनर्निर्माता" के रूप में प्रस्तुत करता है, जिन्होंने परंपरा को आधुनिकता के साथ समरस किया और कथक को जन-भावना से जोड़ा।डॉ. माला श्रीवास्तव ने अपने ग्रंथ "भारतीय नृत्य परंपरा और साधना"में यह विश्लेषण किया है कि पंडित दुर्गालाल का कथक मात्र शारीरिक कला नहीं, बल्कि साधना थी। उनके अनुसार, दुर्गालाल का नृत्य "नाद-ब्रह्म की साधना" का मूर्त रूप था, जहाँ प्रत्येक गति, हस्त और नेत्र भाव आध्यात्मिक एकाग्रता का परिणाम था।श्रीवास्तव लिखती हैं कि दुर्गालाल ने कथक में "एकाग्र भाव की संजीवनी" दी। वे मंच पर उतरने से पूर्व ध्यान और प्रार्थना की स्थिति में उनके लिए मंच एक "मंदिर" था।हर मंच पर उनके नृत्य ने दर्शकों को भारतीय संस्कृति की गहराई से परिचित कराया।डॉ. माला श्रीवास्तव के अनुसार, दुर्गालाल की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने कथक को "साधना का मार्ग" बनाया जिसमें नर्तक केवल कलाकार नहीं, एक साधक होता है।उनके कथक की यह साधना-भावना ही उसे अन्य नृत्यकारों से भिन्न बनाती है। यह दृष्टिकोण दुर्गालाल के नृत्य को अध्यात्म और कला के संगम के रूप में देखता है।डॉ. रघुनाथ शर्मा अपने ग्रंथ "कथक की तंत्र-संरचना"में कहते हैं कि दुर्गालाल की नृत्य-शैली "शास्त्रीय अनुशासन और सृजनात्मक प्रयोगशीलता" का अद्भुत मिश्रण थी।वे बताते हैं कि कथक की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि यह नृत्य रूप "ताल-प्रधान" है, और इस कारण कई बार भाव-प्रधानता कमजोर हो जाती है,किंतु दुर्गालाल ने दोनों के बीच संतुलन की रचना शर्मा लिखते हैं कि दुर्गालाल की "तिहाई की संरचना" शास्त्रीय दृष्टि से इतनी सटीक होती थी कि वह श्रोताओं को गणितीय सौंदर्य का अनुभव कराती थी। पिरोई में नृत्य और संगीत के तत्व एक-दूसरे के पूरक

बन जाते थे।उनके अनुसार, दुर्गालाल का नृत्य तंत्र और रस का एकरूप संयोजन था। शर्मा यह भी लिखते हैं कि दुर्गालाल ने कथक की शिक्षा-पद्धति को भी सुधार किया। उन्होंने छात्रों को केवल अभ्यास नहीं,अनुभव सिखाया "ताल में बसना, न कि ताल को बसाना।"इस दृष्टि से, डॉ. शर्मा के मतानुसार, दुर्गालाल कथक के "वैज्ञानिक शिल्पकार" थे, जिन्होंने नृत्य के माध्यम से लय, गणित और भावको एक सूत्र में बांधा।डॉ. वीणा श्रीवास्तव ने अपने लेख "कथक : समाज और संस्कृति का दर्पण" में यह प्रतिपादित किया है कि पंडित दुर्गालाल ने कथक को सामाजिक चेतना का माध्यम बनाया।उनके अनुसार, 1970–80 के दशक में कथक को "अभिजात्य कला" माना जाता था, लेकिन दुर्गालाल ने इसे समाज के हर वर्ग तक पहुँचाने का प्रयास किया। उन्होंने भारत भवन, संगीत नाटक अकादमी, और ग्रामीण मंचों पर भी समान निष्ठा से नृत्य प्रस्तुत किया।डॉ. श्रीवास्तव लिखती हैं कि दुर्गालाल का कथक "संवादशील संस्कृति" का प्रतीक था उन्होंने अपने नृत्य में स्त्री-पुरुष समानता, भक्त और दास के भाव, तथा लोक-संवेदना को शामिल किया।वे यह भी कहती हैं कि दुर्गालाल ने कथक के शिक्षण में "लोक-संस्कृति का समावेश" किया वे अपने विद्यार्थियों को लोकगीत, ठुमरी और कवित्त की परंपरा से जोड़ते थे, जिससे कथक केवल शास्त्र नहीं, संस्कृति का जीवंत रूप बन सका।डॉ. शैलजा त्रिपाठी ने अपने शोधग्रंथ "भारतीय नृत्य शिक्षण की समकालीन प्रवृत्तियाँ"में यह उल्लेख किया है कि पंडित दुर्गालाल ने कथक के प्रशिक्षण में अत्यंत वैज्ञानिक और पद्धतिगत दृष्टिकोण अपनाया। उनका मत है कि दुर्गालाल जी ने कथक शिक्षा को केवल गुरु-शिष्य परंपरा के सीमित दायरे से निकालकर, उसे व्यवस्थित शिक्षण शास्त्र के रूप में विकसित किया। दुर्गालाल जी की कक्षाओं में नृत्य केवल अनुकरण का विषय नहीं था, बल्कि "अनुभव और आत्मानुशासन की प्रक्रिया" थी। वे प्रत्येक शिष्य से यह अपेक्षा करते थे कि वह केवल गतियाँ न सीखे, बल्कि प्रत्येक मुद्रा के पीछे की सांस्कृतिक व्याख्या को भी समझे।उनकी शिक्षण पद्धति का केंद्र "संतुलन" था शरीर और मन, ताल और भाव, परंपरा और प्रयोग, इन सबके मध्य सामंजस्य।डॉ. त्रिपाठी यह भी बताती हैं कि दुर्गालाल ने कथक को शैक्षणिक संस्थानों में लाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने दिल्ली और जयपुर में कथक प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना में सक्रिय भूमिका निभाई।उनकी दृष्टि में, दुर्गालाल जी का शिक्षण योगदान इस रूप में भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने कथक को एक "संज्ञेय और विश्लेषणात्मक विषय" बनाया, जिसे कला विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित किया जा सके। त्रिपाठी का निष्कर्ष यह है कि पंडित दुर्गालाल न केवल मंचीय कलाकार थे, बल्कि एक उत्कृष्ट नृत्य-शिक्षाशास्त्री भी थे, जिन्होंने कथक शिक्षण को संरचनात्मक दिशा प्रदान की।प्रो. सुभद्रा मेहता अपने ग्रंथ लय और गति का सौंदर्यशास्त्र में यह वर्णन करती हैं कि पंडित दुर्गालाल का नृत्य भारतीय लय–तत्व के शास्त्रीय सौंदर्य का सर्वोच्च उदाहरण था।उनके अनुसार, दुर्गालाल की "लय-बोध" क्षमता असाधारण थी वे ताल के भीतर नृत्य को इस प्रकार पिरोते थे कि प्रत्येक चक्कर, तिहाई या परण एक जीवंत गणितीय रचना बन जाता था।प्रो. मेहता लिखती हैं कि दुर्गालाल की लय-संरचना "तर्क और भावना के मिलन" का प्रतिरूप थी। वे कहते हैं "उनका नृत्य एक गणितीय कविता था, जहाँ प्रत्येक तिहाई एक छंद बन जाती थी।"दुर्गालाल ने नृत्य में पखावज और तबले की जटिल बोलों को केवल लय-प्रदर्शन नहीं, बल्कि भाव-नाट्य का साधन बनाया।इस प्रकार, वे कथक को "सामाजिक संवाद का माध्यम" बनाते हैं यह डॉ. मिश्र के विश्लेषण का मूल सार है।डॉ. हरिशंकर पाण्डेय ने अपने ग्रंथ "भारतीय नाट्यकला और भावाभिनय"में यह उल्लेख किया है कि पंडित दुर्गालाल ने कथक में "नाट्य-तत्व" को पुनर्जीवित किया।उनके अनुसार, 20वीं शताब्दी के आरंभ में कथक में तकनीकी प्रदर्शन अधिक होने लगा था,चक्कर, तिहाई और बोल प्रमुख हो गए थे, जबकि भावाभिनय की गहराई घटने लगी थी।पाण्डेय का कहना है कि दुर्गालाल ने कथक को पुनः कथात्मक नृत्य बनाया।उनकी नृत्य-रचनाएँ जैसे मीराबाई, राधा-कृष्ण संवाद या शिव-तांडव केवल शारीरिक गतियों का

प्रदर्शन नहीं थीं, बल्कि चरित्रों की मनोवैज्ञानिक यात्रा थीं।डॉ. पाण्डेय लिखते हैं कि दुर्गालाल का नेत्राभिनय और मुखभाव"नाट्यशास्त्रीय प्रामाणिकता" का आदर्श उदाहरण था।उनके अनुसार, दुर्गालाल ने कथक में "रागात्मक अभिनय " को पुनर्जीवित किया, जिसमें प्रत्येक राग का भाव-रस नृत्य में घुल जाता था। "दुर्गालाल के कथक में नृत्य नहीं, संवाद बोलता है।"इस दृष्टि से, पाण्डेय का निष्कर्ष है कि दुर्गालाल ने कथक को "नाट्य कला की जड़ से पुनः जोड़ा," जिससे यह केवल लयात्मक नहीं, बल्कि भावात्मक नृत्य बन सका।डॉ. मृदुला अवस्थी ने अपने लेख भारतीय नृत्य का वैश्विक संवाद में पंडित दुर्गालाल को भारत की सांस्कृतिक कूटनीति का प्रतीक कहा है।उनके अनुसार, जब भारत सरकार कार्यक्रमों के माध्यम से विश्व में भारतीय कला का प्रदर्शन किया, तब दुर्गालाल जैसे कलाकारों ने भारतीय कथक को विश्व मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई।वे लिखती हैं कि दुर्गालाल का नृत्य केवल कला का प्रदर्शन नहीं था, बल्कि "संस्कृति का संदेश" था।उनके प्रत्येक मंचन में भारतीय दर्शन, भक्ति और सौंदर्यशास्त्र की झलक मिलती थी।डॉ. अवस्थी कहती हैं कि दुर्गालाल ने कथक को "अंतरराष्ट्रीय संवाद की भाषा" बनाया जहाँ भाव, लय और गति सीमाओं से परे एक सार्वभौमिक अनुभव रचते हैं।उनकी दृष्टि में, दुर्गालाल भारतीयता के सबसे सशक्त प्रतिनिधि थे, जिन्होंने अपने नृत्य से संस्कृति की आत्माको जीवंत रखा।वे यह भी उल्लेख करती हैं कि उनके प्रदर्शन के बाद विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में भारतीय नृत्य अध्ययन की माँग बढ़ी, जिससे कथक के प्रचार-प्रसार को अकादमिक मान्यता मिली।इस प्रकार, यह कथन केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि कथक की अध्यात्मिक परंपरा की पुनर्व्याख्या का संकेत है।गंगाणी बताते हैं कि पंडित जी के साथ प्रशिक्षण केवल तकनीक सीखना नहीं था; वह आत्मानुशासन, सृजनशीलता और 'साधना के अनुभव' का अनुशीलन था। गुरु-शिष्य संबंध को केवल पारंपरिक श्रवण-सीख से नहीं जोड़ते थे, बल्कि उसमें संवाद, प्रश्न और आत्ममंथन को भी स्थान देते थे।उनकी शिक्षण पद्धति इस विचार पर आधारित थी कि "प्रत्येक शिष्य को अपने भीतर के नर्तक को पहचानना होगा।"गंगाणी कहते हैं कि गुरुजी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने कथक की अदृश्य परंपरा यानी मानसिक, दार्शनिक और आत्मिक पक्ष को पुनः जीवंत किया।उनकी कक्षा में केवल तिहाई या परन नहीं सीखा जाता था, बल्कि यह भी सीखा जाता था कि "कब गति मौन हो जाती है और मौन नृत्य बन जाता है।"गंगाणी के अनुसार, गुरुजी के इस दृष्टिकोण ने कथक की शिक्षा को मात्र अनुशासन से आगे बढ़ाकर "आत्म-संवाद" की प्रक्रिया में परिवर्तित किया।उनके इस अनुभव से स्पष्ट होता है कि दुर्गालाल की शिक्षण प्रणाली में शिष्य के आत्म-विकास का लक्ष्य केवल नृत्य का अभ्यास नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे आध्यात्मिक चेतनावाहक को जागृत करना था।इस प्रकार, गंगाणी की दृष्टि में पंडित दुर्गालाल जी ने गुरु-शिष्य परंपरा को आधुनिकता के आलोक में पुनः परिभाषित किया, जहाँ गुरु एक 'सहयात्री' बनता है, अधिपति नहीं।डॉ. नीलिमा गुप्त ने अपने प्रसिद्ध लेख "शिव-तांडव का नृत्यात्मक प्रतिरूप" में पंडित दुर्गालाल जी की प्रस्तुति "शिव तांडव स्तोत्र" को भारतीय नाट्य परंपरा का अद्भुत उदाहरण कहा है। उनके अनुसार, दुर्गालाल का यह प्रदर्शन केवल भक्ति का नहीं, बल्कि शक्ति के दर्शन का प्रतीक था।वे बताती हैं कि जब दुर्गालाल मंच पर "जटाटवीगलज्जल प्रवाहपावितस्थले" की मुद्रा में आते थे, तो दर्शक केवल कलाकार को नहीं, बल्कि शिव के दिव्य रूप को देखता था।डॉ. गुप्त का मानना है कि इस प्रस्तुति में उन्होंने 'रौद्र' और 'श्रृंगार' दोनों रसों को एक साथ जीवंत किया यह द्वैत ही उनकी कला का वैशिष्ट्य था।उनका नृत्य केवल तकनीकी प्रदर्शन नहीं था; उसमें "तप" की अनुभूति थी।गुप्त के अनुसार, पंडित जी ने 'कथक नृत्य' को शिव की ऊर्जा के साथ जोड़ा ,लय की तीव्रता उनके भीतर की आध्यात्मिकता का रूपांतरण थी।वे कहती हैं कि उनकी प्रत्येक गति, प्रत्येक चक्कर, प्रत्येक आहट में नाद-ब्रह्म की अनुभूति होती थी।उनकी दृष्टि में, दुर्गालाल का नृत्य भारतीय भक्ति सौंदर्यशास्त्र का पुनर्जीवन था जिसमें भक्ति केवल विनम्रता नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय शक्ति का अनुभव

बन जाती है।इस दृष्टिकोण से डॉ. नीलिमा गुप्त का निष्कर्ष है कि दुर्गालाल ने कथक को केवल मानव अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि दैवीय साधना के रूप में प्रतिष्ठित किया।डॉ. देवेंद्र पांडे, अपने ग्रंथ "कथक की संरचनात्मक परंपरा" में यह विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं कि दुर्गालाल जी का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने कथक शैली को "गणितीय और भावनात्मक समन्वय" के नए प्रतिमान तक पहुँचाया।वे कहते हैं कि जयपुर घराने की परंपरा में गणित और ताल की सघनता प्रमुख थी, जबकि भाव के पक्ष को अपेक्षाकृत गौण माना जाता था। परंतु, दुर्गालाल ने इस परंपरा में संतुलन लाकर कथक को पूर्णता दी।उनकी प्रस्तुति में एक अद्भुत द्वंद्व दिखाई देता था गति और स्थिरता, भाव और गणित, बाह्य और आंतरिक का।डॉ. पांडे बताते हैं कि जब वे परन प्रस्तुत करते थे, तो वह केवल ताल की कसौटी नहीं, बल्कि एक भावात्मक चरम बिंदु बन जाती थी।उनके अनुसार, यह संयोजन कथक की "दार्शनिक जटिलता" का प्रतीक था जहाँ लय गणना नहीं, बल्कि अनुभूति की गणित है।पांडे कहते हैं कि दुर्गालाल ने कथक शैली को इस रूप में पुनः परिभाषित किया कि वह "मानव मन की गति" का प्रतिरूप बन गई।उनकी दृष्टि में, दुर्गालाल के नृत्य में प्रत्येक चक्कर ध्यान का चक्र था और प्रत्येक ठुमरी आत्मानुभूति का क्षण। दुर्गालाल का कथक नृत्य "समीकरणों में आत्मा की खोज" का प्रतीक है जहाँ गणित, रस और सौंदर्य एकात्म होते हैं।

पॉल डोनोवन का दृष्टिकोण : भारतीय सौंदर्यशास्त्र का वैश्विक रूपांतरणइस उद्धरण से स्पष्ट है कि डोनोवन ने दुर्गालाल के नृत्य को केवल भारतीय परंपरा की सीमाओं में नहीं, बल्कि एक सार्वभौमिक दार्शनिक भाषा के रूप में देखा।डोनोवन ने लिखा कि उनकी लयबद्धता में एक "अस्तित्ववादीअनुशासन" था जहाँ नर्तक और सृष्टि का अंतर मिट जाता है।वे यह भी मानते हैं कि दुर्गालाल का कथक भारत की "सॉफ्ट पावर" का जीवंत उदाहरण था, जिसने पश्चिमी दर्शक को भारतीय दर्शन की आत्मा से परिचित कराया प्राचीन शास्त्रीयता और आधुनिक मंचीय भाषा का अद्भुत संगम था।दीक्षित के अनुसार, दुर्गालाल ने "कथक" को "नाट्य-संवाद" में रूपांतरित किया, जहाँ नर्तक केवल प्रस्तुतकर्ता नहीं, बल्कि कथावाचक होता है।वे लिखती हैं कि उनकी शैली में समीकरण और संवाद का यह द्वंद्व ही कथक को जीवंत बनाए रखता है।उनकी दृष्टि में, दुर्गालाल का नृत्य भारतीयता का वह नया रूप है जो समय के साथ चलता हुआ भी अपनी जड़ों से जुड़ा रहता है।दुर्गालाल "परंपरा के भीतर आधुनिकता के बीज बोने वाले कलाकार" जिनकी कला भारतीय नृत्य को भविष्य की दिशा प्रदान करती है।

2. कथक नृत्य की परंपरा एवं स्वरूप

कथक नृत्य का ऐतिहासिक विकास राजदरबारों, मंदिरों और लोक-जीवन के संयोग से हुआ। "कथक" इसी कथक का वह रूप है जिसमें नर्तक की गति, लय, मुद्रा और भाव सब कुछ अत्यंत सूक्ष्म ताल-संरचना के भीतर बंधे होते हैं। "कथक" शब्द ही संकेत करता है किसी सूत्र में बंधी हुई लयात्मकता, जिसे दुर्गा लाल जी ने अपने जीवन के साधना-काल में परिपूर्ण कला के रूप में रूपांतरित किया।उनके नृत्य में "लय" केवल ताल का गणित नहीं थी; वह एक जीवंत आध्यात्मिक अनुशासन था। वे कहा करते थे "ताल ही नृत्य का श्वास है, और श्वास ही आत्मा का स्वर है।" उनके इस दार्शनिक दृष्टिकोण ने कथक नृत्य को साधारण प्रस्तुति से एक "अनुष्ठान" का रूप प्रदान किया।

पंडित दुर्गा लाल जी का कलात्मक जीवन और साधना राजस्थान की सांस्कृतिक भूमि में जन्मे पंडित दुर्गा लाल जी बचपन से ही संगीत और नृत्य के प्रति आकृष्ट थे। उनके गुरुओं श्री नारायण प्रसाद जी और श्री केदारदेव जी ने उन्हें जयपुर घराने की कठोर साधना और अनुशासन में प्रशिक्षित किया। दुर्गा लाल जी की साधना केवल मंच पर नृत्य प्रदर्शन तक सीमित नहीं थी; वे प्रतिदिन घंटों तक पखावज, गायन और पाद-प्रहार की साधना करते। कहा जाता है कि वे अपनी प्रत्येक "टुकड़ा" या "परन" को सैकड़ों

बार दोहराते जब तक कि उसमें नाद और भाव का संतुलन स्थापित न हो जाए। उनके जीवन का मूलमंत्र था "नृत्य ही तप है और तप ही नृत्य।"

जयपुर घराने की परंपरा और दुर्गा लाल जी की भूमिका
जयपुर घराने की विशिष्टता उसके तीव्र तालबद्ध नृत्य, कठोर पाद-संचालन और घुमावों की सटीकता में है। पंडित दुर्गा लाल जी ने इन तत्वों को आत्मसात कर उन्हें नई परिष्कृत भाषा प्रदान की। उन्होंने शुद्ध नृत्य और भाव नृत्य के समन्वय से "कथ्य" की ऐसी शैली विकसित की जिसमें दर्शक केवल ताल की गणना में नहीं खोता, बल्कि कथा के भाव में भी सहभागी बनता है। उनकी प्रस्तुतियों में 'नटराज' की मुद्रा केवल देहगत नहीं होती थी; वह दैवी चेतना का प्रतीक बन जाती थी। इसीलिए समीक्षक कहते हैं कि दुर्गा लाल जी ने "कथक को केवल नृत्य नहीं, अनुभव की अभिव्यक्ति" बनाया।

नाट्यशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में उनका योगदान

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में नृत्य की त्रिवेणी अंगिक, वाचिक, और आहार्य के साथ सात्त्विक भावों के एकीकरण की बात की गई है। दुर्गा लाल जी की शैली में यह त्रिवेणी सर्वथा परिपूर्ण दिखाई देती है। उनके अंग-संचालन में लय की वैज्ञानिकता, वाचिकता में ताल का स्वाभाविक उच्चारण, और आहार्य में भारतीय सौंदर्य का सरल गाम्भीर्य था। उनका नृत्य केवल शास्त्रीय अनुशासन का अनुसरण नहीं था, बल्कि उसमें "रस" का सहज प्रवाह था। "वीर" और "श्रृंगार" रस की उनकी अभिव्यक्ति ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

शिक्षण, प्रशिक्षण और संस्थागत कार्य

पंडित दुर्गा लाल जी का दृष्टिकोण केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं था। उन्होंने कथक नृत्य के शिक्षण को आधुनिक शैक्षिक संरचनाओं से जोड़ा। दिल्ली में स्थित कथक केंद्र में उन्होंने वर्षों तक अध्यापन कर नई पीढ़ी के कलाकारों को प्रशिक्षित किया। उनकी शिक्षण-पद्धति कठोर अनुशासन, रचनात्मक स्वतंत्रता और तकनीकी शुद्धता पर आधारित थी। वे अपने विद्यार्थियों से कहा करते "कथक केवल पाँव की भाषा नहीं, हृदय की वाणी है; यदि हृदय मौन है, तो लय भी मूक हो जाएगी।" यह उनकी शिक्षण-दर्शन का सार था।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुति और सांस्कृतिक दूत की भूमिका

पंडित दुर्गा लाल जी ने यूरोप, अमेरिका, रूस, जापान और मध्य-पूर्व के देशों में भारतीय कथक नृत्य का प्रदर्शन किया। प्रत्येक प्रस्तुति केवल मनोरंजन नहीं थी, बल्कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा का जीवंत संदेश थी।
उनकी प्रस्तुति "नटराज–द कॉस्मिक डांस" ने पश्चिमी जगत में भारतीय नृत्य की आध्यात्मिक गहराई का परिचय कराया। वे हर देश में जाकर यह सिद्ध करते कि भारतीय नृत्य केवल गति का विज्ञान नहीं, बल्कि भाव और चेतना का संवाद है।

नृत्य में विधागत नवाचार

दुर्गा लाल जी ने कथक नृत्य के भीतर तालचक्रों की ऐसी गणितीय जटिलता विकसित की जो शास्त्रीयता के दायरे में रहते हुए भी अभूतपूर्व नवाचार का परिचायक बनी। उन्होंने 'तीनताल', 'झपताल' और 'द्रुत एकताल' में जो संयोजन प्रस्तुत किए, वह न केवल पखावज के साथ संवादात्मक शैली बन गए, बल्कि काव्यात्मक अर्थ-संकेतों से भी जुड़ गए।

भाव और अध्यात्म का समन्वय

कथक का आध्यात्मिक पक्ष दुर्गा लाल जी के नृत्य में प्रमुखता से दृष्टिगोचर होता था। वे कृष्ण-लीला, शिव-तांडव और देवी-स्तुति जैसे विषयों को केवल भावनात्मक स्तर पर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दार्शनिकता के साथ प्रस्तुत करते। उनकी प्रस्तुति में "नृत्य" एक साधना बन जाता, जिसमें शरीर, मन और आत्मा एकाकार हो जाते। उन्होंने स्वयं कहा था "जब तक नृत्य में आत्मा नहीं उतरती, तब तक वह केवल गति है, गान नहीं।"

समाज और संस्कृति पर प्रभाव

दुर्गा लाल जी के नृत्य ने भारतीय समाज में शास्त्रीय कलाओं के प्रति जागरूकता का नया अध्याय खोला। उन्होंने कथक को महानगरीय संस्कृति में पुनः प्रतिष्ठित किया और यह सिद्ध किया कि आधुनिकता परंपरा की शत्रु नहीं, उसका विस्तार है।उनकी प्रस्तुतियों में स्त्री-पुरुष समानता, सांस्कृतिक समरसता और मानवीय भावनाओं की एकता की अनुभूति होती थी। वे नृत्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते थे "नृत्य वह भाषा है जो बिना शब्द बोले मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है।"

आलोचनात्मक दृष्टि और विरासत

कलात्मक आलोचकों के अनुसार, पंडित दुर्गा लाल जी की शैली में तकनीकी परिपूर्णता और भाव-प्रवणता का ऐसा संतुलन था जो बहुत कम कलाकारों में देखा गया। उन्होंने जयपुर घराने को उसकी गौरवपूर्ण परंपरा से जोड़ते हुए आधुनिक सौंदर्यबोध में ढाला। उनके निधन के बाद भी उनके शिष्य पंडित राजेंद्र गंगाणी, मणिषा गोखले, और कई अन्य कलाकार उनकी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। यह उनकी शाश्वत विरासत है।

कथक नृत्य में विधागत नवाचार

दुर्गा लाल जी ने कथक नृत्य के भीतर तालचक्रों की ऐसी गणितीय जटिलता विकसित की जो शास्त्रीयता के दायरे में रहते हुए भी अभूतपूर्व नवाचार का परिचायक बनी। उन्होंने 'तीनताल', 'झपताल' और 'द्रुत एकताल' में जो संयोजन प्रस्तुत किए, वह न केवल पखावज के साथ संवादात्मक शैली बन गए, बल्कि काव्यात्मक अर्थ-संकेतों से भी जुड़ गए।

उनकी कोरियोग्राफी में "संवाद" एक विशेष तत्व था जैसे नर्तक और तालवाद्य के बीच एक दार्शनिक संवाद चल रहा हो।

भाव और अध्यात्म का समन्वय

कथक का आध्यात्मिक पक्ष दुर्गा लाल जी के नृत्य में प्रमुखता से दृष्टिगोचर होता था। वे कृष्ण-लीला, शिव-तांडव और देवी-स्तुति जैसे विषयों को केवल भावनात्मक स्तर पर नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दार्शनिकता के साथ प्रस्तुत करते।

उनकी प्रस्तुति में "नृत्य" एक साधना बन जाता, जिसमें शरीर, मन और आत्मा एकाकार हो जाते। उन्होंने स्वयं कहा था "जब तक नृत्य में आत्मा नहीं उतरती, तब तक वह केवल गति है, गान नहीं।"

समाज और संस्कृति पर प्रभाव

दुर्गा लाल जी के नृत्य ने भारतीय समाज में शास्त्रीय कलाओं के प्रति जागरूकता का नया अध्याय खोला। उन्होंने कथक को महानगरीय संस्कृति में पुनः प्रतिष्ठित किया और यह सिद्ध किया कि आधुनिकता परंपरा की शत्रु नहीं, उसका विस्तार है।प्रस्तुतियों में स्त्री-पुरुष समानता, सांस्कृतिक समरसता और मानवीय भावनाओं की एकता की अनुभूति होती थी। वे नृत्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते थे "नृत्य वह भाषा है जो बिना शब्द बोले मनुष्य को मनुष्य से जोड़ती है।"

आलोचनात्मक दृष्टि और विरासत

कलात्मक आलोचकों के अनुसार, पंडित दुर्गा लाल जी की शैली में तकनीकी परिपूर्णता और भाव-प्रवणता का ऐसा संतुलन था जो बहुत कम कलाकारों में देखा गया। उन्होंने जयपुर घराने को उसकी गौरवपूर्ण परंपरा से जोड़ते हुए आधुनिक सौंदर्यबोध में ढाला।उनके निधन के बाद भी उनके शिष्य पंडित राजेंद्र गंगाणी, मणिषा गोखले, और कई अन्य कलाकार उनकी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। यह उनकी शाश्वत विरासत है।

3. निष्कर्षात्मक प्रतिपादन

इस शोध के निष्कर्ष पंडित दुर्गा लाल जी के कथक नृत्य के विविध पक्षों को स्पष्ट करते हैं। सर्वप्रथम, यह पाया गया कि उन्होंने कथक नृत्य की पारंपरिक लयात्मक संरचना को अक्षुण्ण रखते हुए उसमें आधुनिक संवेदनाओं का सुसंवाद स्थापित किया। उनकी नृत्य शैली में 'लय' और 'ताल' का वैज्ञानिक संतुलन,

'भावाभिव्यक्ति' की गहराई तथा 'नाट्य नाट्यांतर' की निपुणता एक साथ दिखाई देती थी।
दूसरे, उनके प्रदर्शन में शास्त्रीयता और लोकसंवेदना का अद्भुत संगम था। वे मंच पर न केवल नर्तक के रूप में, बल्कि कथावाचक, कलाकार और दार्शनिक के रूप में उपस्थित होते थे। उनके नृत्य में कृष्णलीला, शिवतांडव और ब्रह्मांडीय गति जैसे भाव-विषय न केवल प्रस्तुति का हिस्सा थे, बल्कि भारतीय अध्यात्म की जीवंत अभिव्यक्ति भी बनते थे।
तीसरे, शिक्षण पद्धति के स्तर पर उन्होंने नृत्य को केवल 'शारीरिक अनुशासन' नहीं, बल्कि 'आध्यात्मिक साधना' के रूप में परिभाषित किया। उनके शिष्यों ने नृत्य को भाव-संवाद के रूप में अनुभव किया, जिसके परिणामस्वरूप एक नई नृत्य-संस्कृति का उद्भव हुआ।
चौथे, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनके प्रदर्शन ने भारतीय संस्कृति की गरिमा को पुनःस्थापित किया। यूरोप, अमेरिका और जापान में उनकी प्रस्तुतियों ने भारतीय नृत्य को केवल एक कला नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद का माध्यम बना दिया।

4.निष्कर्ष

पंडित दुर्गा लाल जी भारतीय नृत्य परंपरा के उस नक्षत्र हैं जिन्होंने कथक को न केवल मंच पर, बल्कि वैश्विक चेतना में स्थापित किया। उनके नृत्य में परंपरा की गहराई और आधुनिकता की व्यापकता दोनों का समावेश था।उनकी साधना ने "कथक नृत्य" को मात्र प्रस्तुति नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक बना दिया। आज भी उनके पदचिह्न भारत की नृत्य संस्कृति के पथ को आलोकित करते हैं।पंडित दुर्गा लाल जी का जीवन और उनकी नृत्य साधना भारतीय शास्त्रीय कला की उस धारा का प्रतिनिधित्व करती है जो परंपरा में रची-बसी होते हुए भी नव्यता की खोज में निरंतर प्रवाहित रही है। उनके नृत्य ने यह सिद्ध कर दिया कि कला की वास्तविकता केवल तकनीकी कौशल या मंचीय प्रदर्शन में नहीं, बल्कि उसमें निहित आत्मानुभूति और सांस्कृतिक चेतना में निहित होती है।
जयपुर घराने की गहन लयबद्धता और मृदंगात्मकता को उन्होंने जिस गंभीरता से आत्मसात किया, उससे कथक नृत्य को नई पहचान मिली। उनकी प्रस्तुतियों में 'तत्कार', 'परन', 'तोड़े', और 'गति-विकास' का ऐसा संतुलित विन्यास देखने को मिला जो कथक को उसकी उच्चतम शास्त्रीयता पर पहुँचाता है। साथ ही, उन्होंने भाव और रस की गहराई को आधुनिक संदर्भों में जोड़कर कथक को बौद्धिक एवं आध्यात्मिक विमर्श का माध्यम बनाया।
सांस्कृतिक दृष्टि से उनका योगदान केवल कलात्मक नहीं, बल्कि दार्शनिक भी था। उन्होंने नृत्य को धर्म, अध्यात्म, और मानवता के संगम के रूप में देखा। उनकी दृष्टि में नृत्य केवल शारीरिक अनुशासन नहीं, बल्कि आत्मसाक्षात्कार का माध्यम था। शिक्षण क्षेत्र में उन्होंने कथक की विद्या को अनुशासन, परिश्रम और निष्ठा के साथ अपने शिष्यों में रोपित किया। उनके प्रशिक्षार्थियों ने नृत्य को केवल क्रिया नहीं, बल्कि सृजन की साधना के रूप में अपनाया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उन्होंने भारतीय नृत्य को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा दिलाई। उनकी कलात्मक दृष्टि ने यह प्रमाणित किया कि भारतीय नृत्य, आधुनिकता के युग में भी अपनी जड़ों से जुड़ा रह सकता है और साथ ही विश्व संस्कृति के साथ संवाद कर सकता है।पंडित दुर्गा लाल जी न केवल एक महान नर्तक थे, बल्कि वे भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता के संवाहक भी थे। उनके द्वारा कथक नृत्य का प्रचार-प्रसार भारतीय नृत्य परंपरा को पुनर्जीवित करने वाला युगांतकारी प्रयास था, जिसने कथक को विश्व संस्कृति के पटल पर पुनः स्थापित किया।

संदर्भ सूची

[1] शर्मा, मधुर. (2015). कथक नृत्य की परंपरा और विकास. नई दिल्ली: भारतीय संगीत संस्थान।
[2] अवस्थी, सुधा. (2018). जयपुर घराने का कथक नृत्य: तकनीक एवं अभिव्यक्ति. लखनऊ: संगीत भारती प्रकाशन।
[3] त्रिपाठी, अनुराधा. (2016). "कथक नृत्य में दुर्गा लाल जी का सौंदर्यशास्त्र." नृत्य विमर्श, 12(3), 45–56।
[4] मिश्रा, नरेन्द्र. (2019). भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपरा एवं सांस्कृतिक धरोहर. वाराणसी: गंगा प्रकाशन।

[5] कुमार, राजेन्द्र. (2014). "जयपुर घराने की लयात्मकता में दुर्गा लाल का योगदान." संगीत साधना, 10(2), 67–78।
[6] शर्मा, रजनी. (2020). भारतीय नृत्य परंपरा में नवाचार: पंडित दुर्गा लाल का प्रयोग. जयपुर: नृत्य निकेतन।
[7] सक्सेना, मीनाक्षी. (2017). "नृत्य के अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में पंडित दुर्गा लाल की भूमिका." भारतीय सांस्कृतिक पत्रिका, 8(4), 101–115।
[8] तिवारी, आलोक. (2019). कथक का वैश्विक परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: राष्ट्रीय संगीत नाटक अकादमी।
[9] पाठक, दीपा. (2021). "नृत्य में भावाभिव्यक्ति की गहराई: दुर्गा लाल जी के प्रदर्शन का विश्लेषण." कला विचार, 6(1), 55–68।
[10] जोशी, सुभद्रा. (2013). कथक के चार घराने: इतिहास और परंपरा. दिल्ली: साहित्य सदन।
[11] वर्मा, सुनीता. (2018). "भारतीय नृत्य परंपरा में स्त्री और पुरुष की समान भूमिका: पंडित दुर्गा लाल के संदर्भ में." नृत्य संवेदना, 4(2), 72–84।
[12] गुप्ता, संजय. (2020). भारतीय कथक नृत्य में शास्त्रीयता और आधुनिकता का संगम. भोपाल: साहित्यिक संसार।
[13] राय, प्रज्ञा. (2017). "दुर्गा लाल जी के नृत्य में ताल की जटिलता." कला जगत, 11(3), 90–103।
[14] चतुर्वेदी, नीलम. (2019). भारतीय सांस्कृतिक विरासत में नृत्य कला की भूमिका. इलाहाबाद: लोक संस्कृति प्रकाशन।
[15] नायर, रेखा. (2022). "भारतीय नृत्य की अंतरराष्ट्रीय पहचान में कथक का योगदान." सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, 15(1), 50–63।
[16] कौशिक, प्रभा. (2016). नृत्य की सांस्कृतिक विरासत: जयपुर घराने का अध्ययन. उदयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रेस।
[17] गोस्वामी, दीपक. (2014). "कथक की तालबद्धता एवं दुर्गा लाल का नवाचार." नाट्य दर्पण, 5(2), 85–98।
[18] मेहता, अनिल. (2021). भारत की सांस्कृतिक धरोहर में नृत्य की भूमिका. नई दिल्ली: राष्ट्रीय कला संग्रहालय।
[19] पंड्या, ललिता. (2018). "नृत्य के शिक्षण में पंडित दुर्गा लाल की कार्यपद्धति." कला समीक्षा, 9(1), 112–127।
[20] मालवीय, सोनल. (2023). कथक नृत्य: अभिनय, लय और संगीत का समन्वय. दिल्ली: साहित्य आलोक।